अपना-अपना काम

मेरे आंगन में आम का एक पेड़ है। एक दिन बड़े सवेरे एक नीली चिड़िया आई। उसने आम के पेड़ पर अपना घोंसला बनाया। दिन गुजरते गए, आंगन हरा हो गया। प्रातः की पहली किरण के साथ चिड़िया के जाने के बाद एक कौआ आया।

घोंसला उसने चोंच से कुरेदा फिर अंडे को चट कर गया। घोंसला धरती पर बिखेर कर कौआ मुंडेर पर बैठ गया। पता नहीं क्यों चिड़िया आज दोपहर वापस लौट आई। उसने देखा घोंसला तहस-नहस होकर धरती पर बिखरा पड़ा है। आते ही समझ गई कि माजरा क्या है। कुछ क्षण उसने सोचा फिर अपनी चोंच में तिनका दबाया। आम के पेड़ पर फिर नीड़ बनाने लगी। मैंने चिड़िया से कहा आम पर नहीं-अमरूद के पेड़ पर बना लो अपना नीड़। कौआ देख रहा है फिर गिरा देगा। चिड़िया ने बड़े आत्मविश्वास से कहा—'कौए ने अपना काम कर दिखाया मुझे अपना काम करने दो। विनाश के डर से निर्माण नहीं रुका करता। उत्तर सुनकर कौआ कांव-कांव कर उड़ गया। मुझमें नए जीवन की आशा जाग उठी।

साभार-बाल वाटिका जुलाई, 97